प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 38 * JUL 2010 *

SN	Title	Min	Coding	Contents	
1	Voice 01.mp3	7		प्रवचन अनुपलब्ध	NA
2	Voice 02.mp3	32		ईश्वर, वेद, गुरु, आत्म-चार कृपाओं का फल : आत्म ज्ञान : जीव तू देह नहीं अपितु मेरा अंश चेतन अमल सुख राशि है	1
3	Voice 03.mp3	39		गीता अ०२/३०:**व्यावहारिक-मैं** ईश्वरकृत देह है,**प्रातिभासिक-मैं** जीवकृत स्व०देह है,**पारमार्थिक-मैं** दृष्टा-साक्षी परमसत्य स्वस्वरूप है	Imp
4	Voice 04.mp3	29		भगवान जगत के अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं, जगत में पाँच अंश - अस्ति भाति प्रिय-ब्रह्म व नाम रूप-जगत का स्वरूप है	
5	Voice 05.mp3	42		देह देही दो पदार्थ हैं, देह असत-जड़-दुःख व देही देह से पृथक सच्चि० स्वरूप है, अपना स्वरूप देह नहीं दृष्टा चेतन आत्मा है	
6	Voice 06.mp3	31		ईश्वर वेद गुरु आत्म-चार कृपाओं का फल :भगवान का स्वरूप सत्-चित-आनंद है-तत्त्वमसि,सभी कर्म प्रकृति में हैं तू अकर्म है	2
7	Voice 07.mp3	46		देह देही दो ही पदार्थ हैं, देह वस्त्र समान व असत एवं देही देह से पृथक सच्चि० स्वरूप है,**अध्यात्मोपनिषद** के अनुसार देह धर्म	Imp
8	Voice 08.mp3	30	Im	चार कृपाऐं-वेद कृपा-कर्म भक्ति ज्ञानकाण्ड, वर्णाश्रमानुसार कर्म ही कर्तव्य है, **कर्म कारक/फल के ४ मत,** काल ही बलवान है	3
9	Voice 09.mp3	*44*		देह देही दो ही पदार्थ हैं, सृष्टि क्रम - ब्रहम में सामान्यज्ञान एवं ईश्वर में विशेषज्ञान-सर्वज्ञ, अवान्तर और महावाक्य से आत्मज्ञान	VIm
10	Voice 10.mp3	32	Im	कर्म प्रारब्ध वश व ईश्वरइच्छा से होते हैं,जागृत ईश्वर की निद्रा-माया व स्वप्न जीव की निद्रा-माया का चमत्कार है,अहं ब्रह्मास्मि	4
11	Voice 11.mp3	00		प्रवचन अनुपलब्ध	NA
12	Voice 12.mp3	30	13/19-21	पुरुष-प्रकृति दो पदार्थ हैं,कर्म कार्य-कारणरूप प्रकृति में हैं,पुरुष दृष्टा व्यापक अकर्म असंग है,प्र०में **अभिमान से ही भव-बन्धन है**	Imp
13	Voice 13.mp3	44		गीता अ०२/३०: देह देही दो ही पदार्थ हैं,३नों देह जड़ मायाकृत हैं व देही देह से पृथक सनातन सच्चि०है वही तेरा स्वरूप है	Imp
14	Voice 14.mp3	28		आत्मा का स्वरूप सच्चि०है जीव स्वभाव वश सुख-अमरता चाहता है, जीव को विश्राम सच्चि०सिन्धु में ही है जो हमारी आत्मा है	5
15	Voice 15.mp3	32		गीता अ०२/३०-३१:देह देही दो पदार्थ हैं,सभी देह वध्य हैं उनमें नित्य-अवध्य एक देही ही है वही तेरा स्वरूप है,जगत लीला है	Imp
16	Voice 16.mp3	32		**रामावतार के प्रयोजन** : त्रि०वेद की प्रमाणिकता, दुष्टों का दलन, संत और गौरक्षा, भक्तों को दर्शन एवं मनुष्यों की शिक्षा हेतु	
17	Voice 17.mp3	00		प्रवचन अनुपलब्ध	NA
18	Voice 18.mp3	42		देह देही दो पदार्थ हैं, देही सच्चि० है मायाकृत सभी देह असत हैं देही आकाशवत् असंग है, निद्रा रूपी मेघ की जगत बरसात है	Imp
19	Voice 19.mp3	28		सीता जी द्वारा भ०राम का नि०नि० स्वरूप निरूपण,सभी देह-उपाधि मैं बनाती हूँ किन्तु सभी देहों में उपहित अद्वितीय राम ही हैं	**
20	Voice 20.mp3	29		देह देही दो पदार्थ हैं,देही सत् व देह असत् हैं, स्वयं को सच्चि०जानते हुए देह से अपने वर्णाश्रमानुसार कर्म करना ही कर्तव्य है	**
21	Voice 21.mp3	31		सीता जी द्वारा भ०राम का नि०नि०स्वरूप निरूपण,सब नाम-रूप उपाधि मात्र हैं राम उन सबमें व्याप्त असंग अविकारी सर्वात्मा हैं	**
22	Voice 22.mp3	37		गीता अ०२/३०-४०:देही नित्य-अबध्य है वही तेरा स्वरूप है,मायाकृत नाशवान देह से नि०कर्म ही कल्याणकारी है-कर्मयोग निरू०	**
23	Voice 23.mp3	35		सीता जी द्वारा भ०राम का निनि०स्वरूप निरूपण,सभी देह मूल प्रकृति सीता का स्वरूप व देही दृष्टा राम हैं,**सहस्त्रमुख रावणकथा**	**
24	Voice 24.mp3	39		गीता अ०२/३८-४५:स्वयं को अकर्म आत्मा जानते हुए देह दृष्टि से वर्णाश्रमानुसार निष्काम कर्म ही धर्म है : कर्मयोग निरूपण	**
25	Voice 25.mp3	00		प्रवचन अनुपलब्ध	NA
26	Voice 26.mp3	39		देह देही दो पदार्थ हैं देही सत् अकर्म दृष्टा है एवं देह असत् एवं दृश्य हैं, सभी कर्म मायाकृत देह में हैं, निष्काम कर्म ही धर्म है	Imp
27	Voice 27.mp3	*29*		भ०राम द्वारा **आत्मा परमात्मा अनात्मा**/चिदाकाश/जीव-निरूपण, **जीव की ७ अवस्थाऐं ब्रह्म व्यापक ज्ञान : चिदाभास प्रकट ज्ञान**	Imp
28	Voice 28.mp3	34		गीता अ०२/४५-५०:अर्जुन अपने सत् स्वरूप आत्मा का ही चिन्तन करो, अविनाशी सुख मिलने पर विषय सुख निरर्थक हैं	**
29	Voice 29.mp3	*29*		सीताराम जगत के मातापिता हैं,**राम द्रष्टा ब्रह्म हैं,**अज्ञान रूपी निद्रा कारण एवं स्वप्न-जागृत जगत कार्य माया सीता का स्वरूप है	Imp
30	Voice 30.mp3	43		हमारा स्वरूप सच्चि०है अज्ञान रूपी निद्रा-प्रकृति स्वयं ही जगत का रूप धर लेती है,जन्म-मरण रूपी रोग की ज्ञान ही औषधि है	**
31	Voice 31.mp3	31		जगत की सीता माता और राम पिता हैं,संतान अपने माता-पिता का ही रूप होती है,सीता राम की शक्ति हैं एवं जगत जननी हैं	Imp
32	Voice 32.mp3	00		प्रवचन अनुपलब्ध	NA
33	Voice 33.mp3	38		गीता अ०२/५०-५१:स्वरूप अज्ञान से ही भव रोग हुआ है ज्ञान ही भव रोग की औषधि है, सामान्य एवं विशेष ज्ञान निरूपण	Imp
34	Voice 34.mp3	31		भगवान जगत के अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं- निमित्त यानि ज्ञान-इच्छा-कर्म एवं उपादान यानी सामग्री निर्माण के हेतु हैं	**
35	Voice 35.mp3	39		गीता अ०२/५१-५५: क्रम से नि०कर्म-भक्ति-**ज्ञान प्राप्ति** जन्म-मृत्यु से मुक्ति देती है, जीव अचल हो जाता है-स्थितप्रज्ञ के लक्षण	a
36	Voice 36.mp3	31		गीता अ०२/५४-५५:स्थितप्रज्ञ के लक्षण - स्थितप्रज्ञ कामना-शून्य, अचल एवं आत्मा में आत्म-रमण से ही संतुष्ट रहता है	b
37	Voice 37.mp3	47		गीता अ०२/५४-५५:स्थितप्रज्ञ के लक्षण + **गीता महात्म्य** : सच्चिदानंद अमृत हैं-जीव भी ब्रह्मरूप है-स्वरूप ज्ञान अमृत हैं	c
38	Voice 38.mp3	39	विशेष	गीता अ०२/५५:स्थितप्रज्ञ के लक्षण-स्वयं को सच्चि०एवं जगत को स्वप्नवत् देखता है,सेठ/जीव व ड्राइव पृथ्वी/स्व,जा,सु०दृष्टान्त	d
39	Voice 39.mp3	36		गीता अ०२/५५-५७:स्थितप्रज्ञ के लक्षण-जो सर्वकामना शून्य आत्मा से आत्मा में संतुष्ट निर्भय व दुःख-सुख शुभाशुभ में समान	e
40	Voice 40.mp3	29		गीता अ०२/५४:स्थितप्रज्ञ के लक्षण-अपनी आत्मा को जानने वाला स्थितप्रज्ञ है,आत्मज्ञान से ही मोक्ष है,छा०उ०सनत नारद सम्वाद	f
41	Voice 41.mp3	31		छा०उ०-सनतकुमार नारद सम्वाद,नारद द्वारा अपना ज्ञान वर्णन व आत्मज्ञान याचना,इ०म०बु०प्रा० ज्ञाता **भूमा**/आत्मतत्त्व निरू०	
42	Voice 42.mp3	36	मिश्रितविषय	स्थितप्रज्ञ के लक्षण-जिसका मन का आत्मा में लगा है+**श्री राम जय राम निरू०** + नारद को **भूमा**/आत्मतत्त्व का उपदेश	g
43	Voice 43.mp3	38		देह-देही २ पदार्थ हैं : पंचभूतकृत स्थूल-सूक्ष्म-देह व स्वरूप अज्ञान जनित कारण-देह निरूपण + देही-आत्मा का स्वरूप निरूपण	
44	Voice 44.mp3	34	Im	तीनों देह + अवस्थाओं व पाँचकोषों से दृष्टा देही-आत्मा सर्वथा अलग असंग है-तत्त्वमसि, आत्मा में स्थिर मन वाला स्थितप्रज्ञ है	h
45	Voice 45.mp3	*56*	विशिष्टसंग्रह	गीता अ०१३/२-३: क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं पंचभूतकृत जड़ देह क्षेत्र व इनका दृष्टा क्षेत्रज्ञ मैं ही हूं,वही तू है,**ब्रह्मोपनिषद**	Imp
46	Voice 46.mp3	00		प्रवचन अनुपलब्ध	NA
47	Voice 47.mp3	50	Im	ओंम का स्वरूप निरू०,माण्डूक्य उ०-३मात्रा अ-उ-म से नामरूप जगत व त्रिपुटियों की उत्पत्ति,चौथा अमात्र दृष्टा तुरीय ब्रह्म है	भूमि
48	Voice 48.mp3	40	Im	अ०वेद:,माण्डूक्य उ०-ओंकार भ०के निनि०/ससा०स्वरूप को बताता है,ओंकार जा०स्व०सु०-माया का स्व०है,इनका दृष्टा आत्मा है	भूमि
49	Voice 49.mp3	48	ओंकार के तीन पाद	अ०वेद: माण्डूक्य उ०- सारा जगत ओंकार रूप ही है जो व्यापक, अदृश्य अद्वैत असंग ब्रह्म से प्रकट हुआ है, ब्रह्म ही आत्मा है, **ब्रह्म और आत्मा का अभेद दर्शन** ही संपूर्ण ज्ञान है, ओंकार-तीन पाद निरूपण ।	भाग १

50	Voice 50.mp3	43		ओंकार का चतुष्पाद तुरीय	अ०वेदः माण्डूक्य उ०-सुषुप्ति/निद्रा कारण माया व स्वप्न-जागृत कार्य माया है, सुषुप्ति का स्वामी **प्राज्ञ** ही **ईश्वर है**, तीनों को देखने वाला व्यापक अदृश्य अद्वैत असंग द्रष्टा अमात्र-**चौथा-तुरीय** ही हमारी **आत्मा** या **ब्रहम** है । ० प्रज्ञानघनं - घनीभूत विशेष ज्ञान , अप्रज्ञ - अज्ञान , प्रज्ञ - प्रकट/विशेष ज्ञान ०	भाग २
51	Voice 51.mp3	35		संपूर्ण माण्डूक्य संक्षिप्त -१	माण्डूक्य उ०पूर्णज्ञान कराने वाला लघुतम उपनिषद है, **आत्मा ही ब्रह्म है एवं ब्रह्म ही आत्मा है** । ब्रह्म अद्वैत है किन्तु माया से उसके ४ पाद हैं, जा०स्व०सु०-तीन पाद ओंकार या माया हैं, इनों से परे व इनका द्रष्टा **तुरीय** ४था **शुद्ध ब्रह्म** ही हमारा **आत्मा** है। आत्मा में स्थित बुद्धि स्थितप्रज्ञ है।न होकर भी जो दिखाई पड़े वह असत् माया है और अदृश्य सत्-द्रष्टा ही ब्रह्म है	भाग ३ मुख्य
52	Voice 52.mp3	32			भगवान की वाणी त्रि०वेद से भगवान के नि०नि०स्वरूप का ज्ञान ही मोक्ष है,४ प्रकार के भक्त, जिज्ञासु श्रेष्ठ, ज्ञानी श्रेष्ठतम	**
53	Voice 53.mp3			संपूर्ण माण्डूक्य संक्षिप्त -२	माण्डूक्य उ० मोक्ष के लिये पर्याप्त है। एक अद्वितीय ब्रह्म ही ओंकार, जिसे प्रणव प्रकृति माया भी कहते हैं, अनेक रूप-४ पाद वाला दिखाई पड़ता है। तीन पाद -जा०स्व०सु०- मायाकृत हैं व इनसे परे चौथा वास्तविक स्वरूप ब्रह्म ज्यों का त्यों अलग रहता है। रामोत्तर तापनी उप०: अकार-विश्व-लक्ष्मण, उकार-तैजस-शत्रुघ्न, मकार-प्राज्ञ-भरत एवं अमात्र-तुरीय-राम	भाग ४
54	Voice 54.mp3	30			भगवान जगत के अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं, कारण से कार्य भिन्न नहीं होता है अतः जगत भगवान का ही अभिन्न रूप है	Imp
55	Voice 55.mp3	22		संपूर्ण माण्डूक्य संक्षिप्त -३	मुमुक्षु के लिये एक माण्डूक्य उ० ही पर्याप्त है । इसमें ओंकार-माया/प्रकृति-के माध्यम से भगवान ने अपना स्वरूप बताया है । अकार-जा०/विश्व, उकार-स्व०/तैजस, मकार-सु०/प्राज्ञ तीनों ओंकार/माया का स्वरूप हैं । इन तीनों शरीर, तीनों अवथाओं व तीनों अभिमानियों से पृथक विलक्षण चौथा अमात्र शान्त सच्चिदानंद ही ब्रह्म/भगवान का स्वरूप है । गोपालोत्तर तापनी उप० : अकार-जा०-विश्व-बलराम, उकार-स्व०-तैजस-प्रद्युम्न, मकार-सु०-प्राज्ञ-अनिरुद्ध, रुक्मणि-मूलप्रकृति एवं गोपियाँ-श्रुतियाँ	भाग ५
56	Voice 56.mp3				भगवान जगत के अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं,निर्माण के लिये **ज्ञान-इच्छा-कर्म** रूपी निमित्त व उपादान दोनों ही आवश्यक हैं	***